कहानी

गुरु माँ

रेणु गुप्ता

मकर-संक्रान्ति का दिन था. फ़िज़ा चहुँ ओर छतों पर तेज वॉल्यूम में बजते शोख फ़िल्मी गीतों और ये काटाज वो काटाज के सम्मिलित शोर से गुंजायमान थी. रंग-बिरंगी पतंगों से भरा नीला आसमान सतरंगा प्रतीत हो रहा था.

मेडिकल की प्रवेश परीक्षा नीट की अभ्यर्थी अद्विका छत पर अपने सामने किताब खोले हुए उसमें कॉन्संट्रेट करने का प्रयास कर ही रही थी, कि तभी कोई चीज धप्प से उसके पीछे आ कर गिर गयी. उसने मुड़ कर देखा, दो तोते किसी के मांझे से घायल हो गिरे पड़े थे. एक बड़ा तोता था और दूसरा नन्हा सा था. उन लहू-लुहान पंछियों को देख कर उसका कलेजा ऊपर को आ गया.

बड़ा तोता बड़ी मुश्किल से अपने पंख फड़फड़ाते हुए नन्हे तोते के निकट जाने का प्रयास कर रहा था. उसने निष्कर्ष निकाला, 'बड़ा तोता शायद उस बेबी पैरट की माँ थी.' बड़े हौले से उसने पहले छोटे तोते की चोटिल गर्दन और पंखों में लिपटा मांझा निकाला और फिर उसे उसकी माँ के पास रख दिया, और फिर बड़े तोते की घायल गर्दन और पंखों में लिपटा मांझा हटाया और उसे छोटे तोते के पास रख दिया. दोनों की गर्दन से खून बह रहा था. माँ ने नन्हे तोते को अपनी लाल चोंच से सहलाते हुए अपने पंखों में सहेज लिया था.

अद्विका दोनों तोतों को अपने हाथों में थाम पड़ौसी वेट अंकल के घर दौड़ी गई, लेकिन उन्होंने उससे गरजती आवाज़ में कहा, आज मेरी छुट्टी है, आज मैं किसी का इलाज नहीं करूँगा, और उसके मुंह पर दरवाज़ा बंद कर दिया.

'उफ़, इन चोटिल पंछियों को देख कर भी उनका जी नहीं पिघला?'

अद्विका घर से अपना फर्स्ट एड बॉक्स ले आई और दोनों पंछियों की मरहम-पट्टी करने लगी.

कुछ ही देर में उसने दोनों चिड़ियाओं के घाव साफ़ कर उनपर एन्टीसेप्टिक मरहम लगा दिया और उनके सामने बाजरा और पानी के बर्तन रख दिए, लेकिन बहुत देर तक दोनों का ही खून बहना बंद नहीं हुआ और कुछ ही देर में दोनों पक्षी निढाल हो मर गए.

'काश... डॉक्टर अंकल अगर उनका इलाज कर देते तो दोनों पंछी आज ज़िंदा होते, कोई डॉक्टर इतना इन्सेंसिटिव कैसे हो सकता है?' अति संवेदनशील अद्विका को यह सवाल मथनी सा मथ रहा था. उसे एक टक देखती उनकी उदास नज़रें मानो उसके ज़ेहन में फ्रीज़ हो गईं.

झर-झर बहती आँखों से उसने दोनों मृत पंछियों को अपने बगीचे के एक कोने में दफना दिया और मन ही मन शपथ ली, मैं वेटरनरी डॉक्टर बनूंगी. इन बेजुबान जानवरों की सेवा करूंगी.

अद्विका नीट एग्जाम में बैठी और नियत वक़्त पर उसका परिणाम भी आ गया. वह बहुत अच्छी पोज़ीशन लाई जिसकी वज़ह से उसे शहर के बेस्ट मेडिकल कॉलेज़ में एडमीशन मिलना था.

उसके माता-पिता बेहद खुश थे. उसके पिता ने उससे कहा, अद्विका बेटा, तुमने वाकई बहुत मेहनत की और तुम्हारी लगन रंग लाई है. आई एम प्राउड ऑफ़ यू बच्चे, कहते हुए उन्होंने उसे अपने सीने से लगा लिया.

माँ उससे बोली, बेटा, तुमने हमारा नाम रोशन कर दिया. सच में, आई एम प्राउड ऑफ़ यू. मेरी बेटी अब डॉक्टर बन जाएगी, कितना अच्छा लगेगा जब कोई पूछेगा, आपकी बेटी क्या करती है? और मैं कहूँगी मेरी बेटी डॉक्टर है.

उफ़, मेरी बेटी ने मेरी दिली हसरत पूरी कर दी. कहते हुए उन्होंने अद्विका को अपने कलेजे से लगा लिया.

पूरा घर उसकी इस नायाब सफलता पर मगन था, लेकिन अद्विका के अंतरमन में कुछ और ही चल रहा था.

वह लैप टॉप पर अपना रिज़ल्ट फिर से देख रही थी, लेकिन सामने स्क्रीन पर दोनों तोतों की क्षुब्ध, आंसू बहाती हताश आँखें मानो फ्रीज़ हो गई थीं जैसे उससे कह रही हों, 'तुम्हें अपनी प्रॉमिस पूरी करनी है, हमारे लिए कुछ करना है', और मन ही मन यह ठानते हुए कि उसे उन बेजुबान प्राणियों की आवाज़ बननी है, उनके लिए कुछ अहम् करना है, वह बोल पड़ी थी, पापा, मैं वेटरनरी डॉक्टर बनूंगी. मैं मूक हेल्पलेस एनीमल्स की सेवा करना चाहती हूँ.

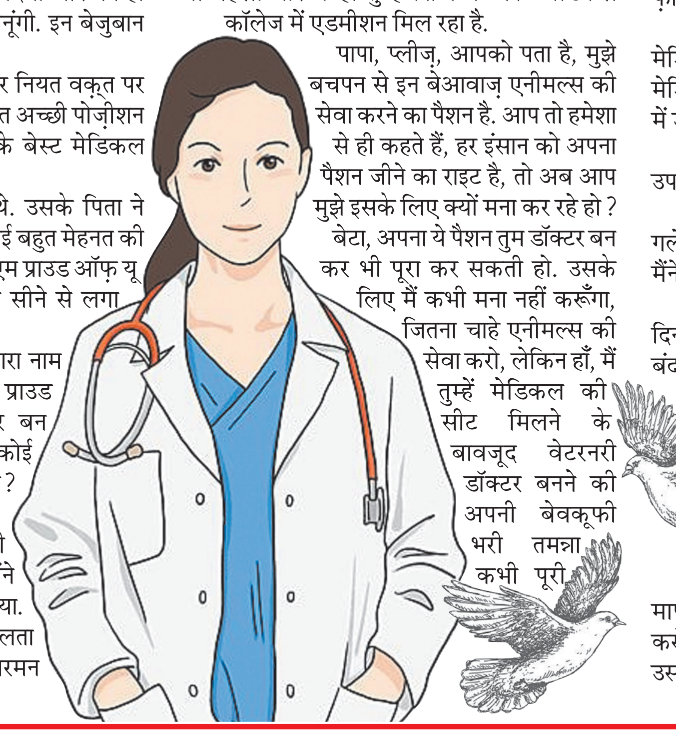

क्या, तुम पागल तो नहीं हो गई हो जो वेटरनरी डॉक्टर बनना चाहती हो? अरे, तुम किस्मत वाली हो जो पहली बार में ही तुम्हें सिटी के बेस्ट मेडिकल कॉलेज में एडमीशन मिल रहा है.

पापा, प्लीज़, आपको पता है, मुझे बचपन से इन बेआवाज़ एनीमल्स की सेवा करने का पैशन है. आप तो हमेशा से ही कहते हैं, हर इंसान को अपना पैशन जीने का राइट है, तो अब आप मुझे इसके लिए क्यों मना कर रहे हो?

बेटा, अपना ये पैशन तुम डॉक्टर बन कर भी पूरा कर सकती हो. उसके लिए मैं कभी मना नहीं करूँगा, जितना चाहे एनीमल्स की सेवा करो, लेकिन हाँ, मैं तुम्हें मेडिकल की सीट मिलने के बावजूद वेटरनरी डॉक्टर बनने की अपनी बेवकूफी भरी तमन्ना कभी पूरी नहीं होने दूंगा. ये मेरी ज़िद है.

उसकी माँ ने भी पिता की बात दोहराई और आखिरकार अद्विका को अपने पेरेंट्स की इच्छा के आगे घुटने टेकने पड़े और उसने मेडीकल कॉलेज में एडमीशन ले लिया.

काल पखेरू अपनी ही गति से उड़ान भरता गया. उसकी पढ़ाई पूरी हुई और वह डॉक्टर बन कर एक बहुत नामचीन अस्पताल में नौकरी करने लगी.

वक़्त के साथ उसका असहाय पशुओं की सेवा करने का जज़्बा बढ़ता ही गया था और वह शाम को अपने फ़्री समय में एक जानवरों के हॉस्पिटल में उनकी वॉलंटरी सेवा करने जाने लगी थी.

उस दिन मकर संक्रांति थी. अद्विका अपनी छत पर चढ़ी हुई चारों ओर उड़ती रंग-बिरंगी पतंगों के बीच पतंगबाजी का लुत्फ उठा रही थी, कि तभी उसका फोन बजा.

हेलो, अद्विका, पापा को शायद हार्ट अटैक आया है. वो सीने में तेज दर्द से तड़प रहे हैं. तुम प्लीज़ फ़ौरन घर आ जाओ. पड़ौस के वेटरनरी डॉक्टर अंकल के बेटे का फ़ोन था.

अद्विका तुरंत अपना बैग और हार्ट अटैक की कुछ मेडिसिन्स ले कर उनके घर भागी और उसने उन्हें कुछ मेडिसिन्स दीं और इंजेक्शंस लगाए और फिर एम्बुलेंस में उनके साथ अपने अस्पताल गई.

सुबह से रात हो आई थी और अद्विका सतत पूरे उपचार के दौरान उनके पास रही आई.

तबियत सँभलने पर उन्हों ने भीगी आँखों और भर्राए गले से अद्विका का हाथ थामते हुए उससे कहा, बेटा, मैंने तुम्हारा साल भर का त्यौहार बर्बाद कर दिया.

मुझे आज तक याद है, मैंने बरसों पहले आज के ही दिन अपने झूठे गुरूर में तुम्हारे मुंह पर अपना दरवाज़ा बंद कर दिया था. मैंने अपनी शपथ का मान भी नहीं रखा. मैं तुम्हारा अपराधी हूँ. मुझे माफ़ कर दो बेटा.

अरे अंकल, यह आप क्या पुरानी बात ले कर बैठ गए? आप स्ट्रेस न लें. नहीं तो आपकी तबियत फिर से खराब हो जाएगी. मुझे वाकई में कुछ याद नहीं.

बिटिया, पहले बताओ, तुमने मुझे माफ़ किया या नहीं? जब तक तुम मुझे माफ़ नहीं करोगी, मेरे दिल पर भारी बोझ रहेगा. वेट अंकल ने उसके सामने हाथ जोड़ते हुए कहा.

क्लास by बड़े भाई

नदी पर नाव हमें क्या सिखाती है

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई हमारे चारों ओर हमारे लिए सन्देश बिखरा है. हमारे चारों ओर स्कूल खुला है या यू कहिए कि हम हर समय स्कूल के ही भीतर हैं। अब हम पर है कि हम सीखें या न सीखें। उदाहरण के लिए आपने नदी पर तैरती नाव देखी होगी। सहज दृष्टि से देखें तो वह नाव बस किसी को जलमार्ग से जाने का साधन मात्र है लेकिन यदि सीखने के भाव से देखें तो यह जल में तैरती नाव् हमारे लिए बड़े संदेश रखती है। आज वाही कुछ सन्देश आपके साथ साझा करता हूँ. ताकि अब जब आप नाव देखें तो आपको कुछ जीवन के लिए दिशा मिले.

नदी पर नाव हमें जीवन के दो महत्वपूर्ण सबक सिखाती है.आइए समझते हैं।

पहला सबक संतुलन.

छोटे भाई नदी में लहर होती है कभी छोटी तो कभी बड़ी. नाव इस पर अपना संतुलन बिठाते हुए अपने लक्ष्य पर पहुँचती है हमें भी जीवन के उतार चढाव की नदी से नाव की तरह संतुलन बनाते हुए यानि बिना परेशान हुए चलते रहना चाहिए. कभी परिस्थिति अनुकूल होगी तो कभी प्रतिकूल. पपर तभी होने जब संतुलन होगा.

दूसरा सबक लक्ष्य.

छोटे भाई नदी में नाव या तो डूबेगी या दिशाहीन होकर कहीं भी भटकेगी यदि हम चप्पू से काम न लें और चप्पू हमने तभी कहीं पहुंचा सकता है जब हमें पता हो हमें किस ओर जाना है. वर्ना चप्पू के चलने का कोई अर्थ नही. हमें इससे सीखना चाहिए कि हमारे पास नाव कि तरह जीवन को भी एक लक्ष्य देना चाहिए जिससे हमारे प्रयास का चप्पू हमें उस लक्ष्य तक पहुंचा सके. वर्ना फिर प्रयास व्यर्थ हैं.

तो यह दो सबक आपको समझ आ गये होंगे. जीवन को एक निश्चित दिशा और उस ओर बढ़ते हुए संतुलन ही ऊंचा बना सकते हैं। बस यही कहना था, धन्यवाद

पुस्तक समीक्षा

डॉ. अखिलेश शर्मा के शाश्वत शब्दों की काव्य यात्रा

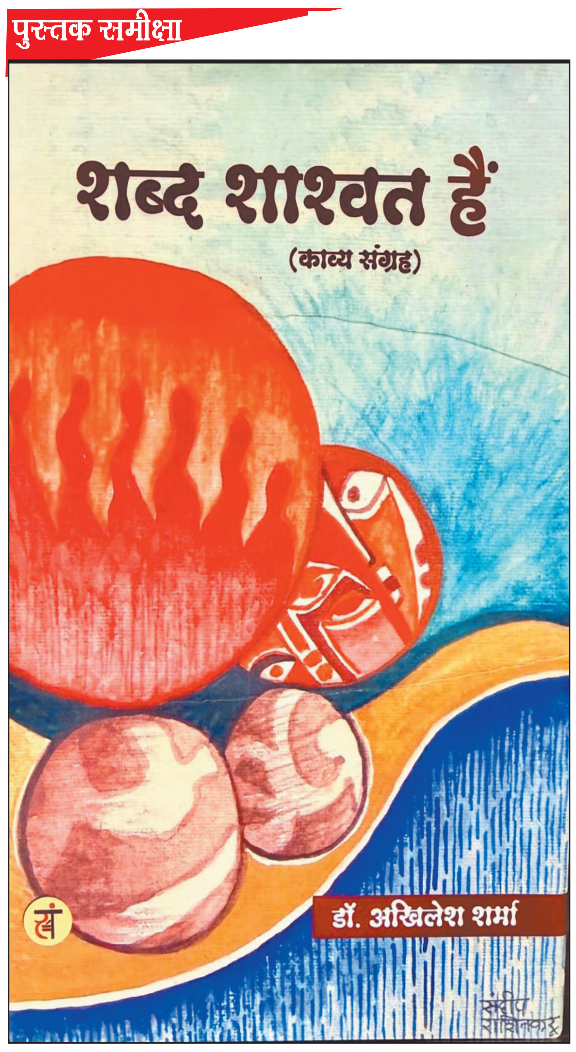

योगेश कुमार दुबे

समीक्ष्य पुस्तक में रचनाकार ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा से अपनी भावनाओं को रखने का प्रयास किया है. कवि सकारात्मकता के साथ नई सोच की कल्पना करता है. इस संदर्भ में अल्बर्ट आइंस्टीन का कथन याद आता है कल्पना ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि नवाचार का जन्म कल्पना से ही होता है. साहित्यिक कल्पना की सुंदर प्रस्तुति काव्य यात्रा को शब्द शाश्वत हैं के रूप में साकार कर रही है.

बाल रोग चिकित्सक डॉ.अखिलेश शर्मा ने अपने प्रथम काव्य संग्रह में शामिल कविता %शब्द और पंचतत्व% में अपने शब्दों को पंचतत्व में समाहित कर शब्दों को जीवन देकर शरीर और आत्मा की व्याख्या को जन्म दिया है, जो काबिले तारीफ है .काव्य संग्रह में कलम की ताकत का उल्लेख भी है इसी कारण कवि शाश्वत रूप में परिलक्षित है.सूरज को विधाता से बड़ा बताकर उसके अस्तित्व को एक कविता में उसके जलने के प्रति समर्पण भाव की अभिव्यक्ति स्तुत्य है.

भूख, शांति, युद्ध, भाईचारे व प्यास की चिंता कर एक चिकित्सक बहा दो प्रेम की नदियां %के माध्यम से अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करता है, और आशान्वित हैं कि हर पथ के मुसाफिर को यदि राह दिखाई जाए तो वह भटक नहीं सकता.

वर्तमान समय में आदमी अपने स्वार्थ के कारण इतना गिर चुका है कि वह अपनों के खून से होली खेलने और धर्म के नाम पर ठेकेदार बना बैठा है .आदमी के चेहरे को पाठकों के सामने उनकी एक कविता आदमी ला रही है .खिलौने और गुड़िया कविता में पुराने खिलौने की जगह पर आधुनिक खिलौने के दर्शन और कैसी गुड़ियाएं हैं? में वर्तमान दौर के सबसे दुखद और चुनौतीपूर्ण परिदृश्य पर कलम ने समाज से प्रश्न किया है. मासूम बच्चियों की व्यथा को कवि ने पाठक के हृदय को झकझोर दिया है.

बेटी दोनों कुलों को रक्षित कर एक पुल बनाकर दो परिवारों के मिलन का सुखद मार्ग बनाती है, इसीलिए दोनों कुलों की शान है,यह उनकी बेटी कविता कहती है.

कलम की ताकत में नैतिक साहस को बढ़ाने की दिशा में कलम के योगदान से समाज के लोगों को जागरूक करती कविता आज के डिजिटल समय में लिखने के महत्व का दर्शन प्रकट करती है.

कोई गीत गुनगुनाएं कविता में रिश्तों को ईमानदारी से निभाने और सड़क पर लड़की की चीख को दरिंदों से मुक्त कराने के भाव के साथ एकता की मिसाल व गांव के चौपालों को पहले जैसा सजाने की कल्पना काबिले तारीफ है.

संस्कार के माध्यम से संस्कार विहीन आजकी पीढ़ी पर कवि हृदय की चिंता समझी जा सकती है. संस्कारवान होना लड़कियों के साथ लड़कों को भी जरूरी है तभी समाज में समरूपता आ सकती है. जिंदगी के सार% में प्यार की सुंदर अभिव्यक्ति का दर्शन है.आज के दौर में प्रेम की ही आवश्यकता है . जब स्नेह के बंधन अटूट होंगे तो हृदय में अपने आप ही चारों धाम के दर्शन होंगे .

हनुमान चालीसा को हाइकु में लिखना अपने आप में एक उपलब्धि है.

अपनी कविता की शतक पुस्तक में पूर्ण करने के बाद कवि ने अपने इन्दौर को एक सशक्त शहर के रूप में स्थापित होने की कल्पना की है. सभी कविताएं रोचक सीधी और सरल भाषा में होने से मानस पटल पर छाप छोड़ती है.

बाल रोग विशेषज्ञ चिकित्सक ने शरीर के तापमान को देखते हुए कविताओं का सृजन किया है,जो शारीरिक पीड़ा और आत्मा की अनुभूति को उर्जा और रोशनी प्रदान करती हैं.

पुस्तक- शब्द शाश्वत हैं
लेखक- डॉ. अखिलेश शर्मा
प्रकाशक- संस्मय प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य- 375 रुपये

कविता

देखो! जा ठंडी......

प्रोफेसर प्रज्ञा मिश्रा
संस्कृत विभाग म.गां. चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

देखो! जा ठंडी, बहुतै घमंडी.
पगडंडी में छायी, कोहरे की मंडी..
जाड़े की ओस तो, ऊपर उड़त भाप.
गरम पानी खौल, जैसे जल है उड़ात..
पानी में डार हाथ, बहुतै सन्नात.
कपकपी मानुष खाँ बहुतै है सतात..
देखो! जा ठंडी, बहुतै घमंडी.
पगडंडी में छायी, कोहरे की मंडी..
बच्चा स्कूलन में, कैसे पढ़न जात.
इनखाँ देखो छुट्टी, बहुतै इफरात..
सूटर में जा ओस, भीतर बैठ जात.
स्कूटर में जो जाड़ो, घूमन है जात..
देखो! जा ठंडी, बहुतै घमंडी.
पगडंडी में छायी, कोहरे की मंडी..
घर के जे पौधे, छुपत-छुपत जात.
तुलसी खाँ ठंडी, नहीं है पुसात..
भौरे औ तितली, नैयाँ दिखात.
कोयल बिन बगिया, ज्यादै लजात..
देखो! जा ठंडी, बहुतै घमंडी.
पगडंडी में छायी, कोहरे की मंडी..
कंडा और लकरी, सीत में नहात.
चूल्हो ओ गुंइया, कैसे जर पाए..
कोऊ बारो चूल्हो, गक्कड़ बनाएं.
भर्ता, गुड़, चटनी, सबै खाँ खबाएं..
देखो! जा ठंडी, बहुतै घमंडी.
पगडंडी में छायी, कोहरे की मंडी..

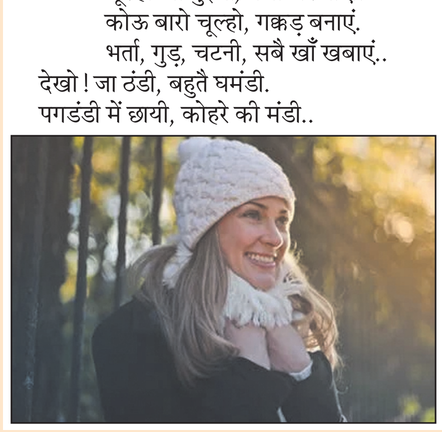

मैं चिता की गोद में भी गीत गाना जानता हूं..

13 जनवरी प्रो. अज़हर हाशमी जी की जयंती पर पुण्य स्मरण

नाश में निर्माण की वीणा बजाना जानता हूं.
संकटों के मध्य भी मैं मुस्कुराना जानता हूं.
मौत को आना है आए मुझको उसका भय नहीं.
मैं चिता की गोद में भी गीत गाना जानता हूं.

श्वेता नागर

ये पंक्तियां साहित्यकार , चिंतक और कवि अज़हर हाशमी जी की हैं . ये केवल काव्य पंक्तियां नहीं हैं बल्कि कह सकते हैं जीवन के अंतिम क्षणों में जिया उनका जीवन दर्शन है . प्रो . हाशमी ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता रहे . दूसरों के भविष्य को पढ़ने वाले हाशमी जी ने अंतिम समय में जब उन्हें घर से अस्पताल के लिए लाया जा रहा था तब उन्होंने स्वयं के लिए भविष्यवाणी करते हुए कह दिया था कि यह उनके जीवन की अंतिम यात्रा रहेगी . 5 जून को जब मैं, स्वयं उनका स्वास्थ्य पूछने अस्पताल गई तब उन्होंने मुझ से कहा कि आज से अधिकतम 4 या 5 दिनों की और मेरी सांसे हैं ,और ऐसा ही हुआ .

श्रद्धेय हाशमी सर सूफ़ी परम्परा के संवाहक रहे ,और श्रीमद् भगवद गीता के चिंतन को उन्होंने अपने जीवन में उतारा . इसलिए ही वे गीता मनीषी कहे जाते हैं .

श्रीमद भगवद गीता के दूसरे अध्याय में भगवान श्री कृष्ण स्थितप्रज्ञ व्यक्ति के लक्षणों को बताते हुए कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति जो जीवन की विपरीत परिस्थितियों में भी शांत और स्थिर रहता है ,वही स्थितप्रज्ञ है .

ऐसे ही स्थितप्रज्ञ अवस्था को प्राप्त हाशमी सर कैंसर जैसी गंभीर बीमारी की असहनीय पीड़ा से गुजरते हुए भी अपने मन , बुद्धि , मस्तिष्क और भावनाओं को नियंत्रित और स्थिर रख अंतिम समय में भी शिष्यों से ज्ञान , धर्म , दर्शन और साहित्य पर चर्चा करते रहे . स्वयं उनका इलाज करने वाले डॉक्टर्स भी उनके इस आत्मबल को प्रणाम करते हुए कह रहे थे कि कैंसर की इस अंतिम अवस्था में हाशमी जी के शरीर की आंतरिक प्रणाली ने अधिकांशत: काम करना बंद कर दिया है लेकिन यह हमारे लिए भी आश्चर्य का विषय है कि वे कैसे इतनी मानसिक स्थिरता को बनाए रखे हुए हैं . आत्मीयता और अपनत्व का भाव प्रो. अज़हर हाशमी जी के व्यक्तित्व का चुंबकीय गुण था, इसलिए जो भी उनके सम्पर्क में आया फिर वह हमेशा के लिए उनसे जुड़ गया .

इसका प्रमाण है हम सब शिष्य, विद्यार्थी तो लंबे समय से उनके सान्निध्य में रहे इसलिए हम सभी का हाशमी सर के प्रति श्रद्धा भाव और भावनात्मक जुड़ाव स्वाभाविक था, लेकिन हाशमी सर का इलाज करने वाले डॉक्टर्स भी उनका इलाज करते हुए उनके उदारतापूर्ण व्यवहार से ऐसे प्रभावित हुए कि वे भी उनके प्रति श्रद्धा भाव से भर उठे . ऐसे ही हमारे रतलाम शहर के प्रसिद्ध डॉक्टर अरुण पुरोहित जो कि हाशमी सर का इलाज कर रहे थे जब उन्हें जांच रिपोर्ट्स से मालूम हुआ कि हाशमी सर को कैंसर है तब उन्होंने हाशमी सर की इतने समर्पित भाव से सेवा की कि ऐसा लग रहा था वे हाशमी सर के डॉक्टर नहीं बल्कि पुत्र या शिष्य हो . वे हंसते हुए हम सभी से कहते थे कि आप सब तो हाशमी सर के शिष्य हैं मैं तो उनसे अभी जुड़ा हूं . मैं 10 जून ,सुबह लगभग 11 .30 बजे का वह मार्मिक दृश्य जब श्रद्धेय हाशमी सर अपनी अंतिम सांसे ले रहे थे ,तब डॉ. पुरोहित उन्हें देखने आए और जैसे ही हाशमी सर ने उन्हें देखा अपने दोनों हाथों को ऊपर उठा लिया, वे कुछ बोल पाने में तो उस समय समर्थ नहीं थे लेकिन उनका भाव साफ झलक रहा था कि वे उन्हें अंतिम बार आशीर्वाद दे रहे हैं, और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हैं . हाशमी सर के इन भावों को कहे बिना डॉक्टर पुरोहित भी समझ गए और उन्होंने भावुक होकर उन्हें गले लगा लिया . यह मौन संवाद मानो देव और देवदूत के बीच हो रहा था . हाशमी सर ने अपने जीवन में जो कुछ भी कमाया उसे समाज के लिए ही खर्च किया . कुछ भी संचय नहीं किया. फकीर सा जीवन जिया .इसलिए इलाज के खर्च को लेकर उन्हें चिंता सता रही थी . क्योंकि एक से डेढ़ महीने वे आईसीयू में रहे थे.

तब अपने शिष्यों के लिए जीवन समर्पित करने वाले हाशमी सर के लिए उनके शिष्य ,और जिस अस्पताल में वे उपचाररत थे उस अस्पताल के संचालक श्री राजेश मूणत ने भी पूरे समर्पण भाव से अपने शिष्य धर्म का निर्वाह करते हुए हाशमी सर को निश्चिंत करते हुए कहा कि मैं जानता हूं आपने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए जिया. आपका मेरे अस्पताल में इलाज करवाना मेरा सौभाग्य है ,क्योंकि आप जैसे सूफ़ी संत का मेरे यहां आना हुआ है . आप किसी प्रकार की चिंता न करें बस यहां से स्वस्थ होकर जाइए .

शिष्यों के साथ- साथ अपने परिवार के प्रति भी हाशमी सर ने अपने दायित्वों का पूर्ण निर्वाह किया और उनके भाई श्री मुख्तार हाशमी और श्री मजहर हाशमी जी ने भी अंतिम समय में अपने बड़े भाई की निष्ठा भाव से सेवा सुश्रुषा की .

हाशमी सर की शिष्य डॉ प्रवीणा दवेसर ने अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता भाव को व्यक्त करते हुए बलिहारी गुरु आपकी पुस्तक प्रकाशित करवाई जिसमें हाशमी सर के शिष्यों ने अपने गुरु के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपने विचारों को व्यक्त किया . इसके साथ ही रूहानियत कार्यक्रम के माध्यम से उनके गीतों की संगीतमय प्रस्तुति भी दी गई . वहीं उनकी एक और शिष्या नंदिनी सक्सेना द्वारा अपने गुरु की स्मृति में 7 दिवसीय भागवत कथा का आयोजन किया गया . जिससे समाज में सांप्रदायिक सद्भाव और सौहार्द का संदेश प्रसारित हुआ. अनिला कंवर, सतीश त्रिपाठी , तुषार कोठारी , हेमंत भट्ट , नीरज शुक्ला , विजय सिंह रघुवंशी ,आरिफ कुरैशी सहित अनेक शिष्यों ने अंतिम समय तक अपने गुरु श्रद्धेय हाशमी सर के लिए समर्पित भाव से अपने दायित्व का निर्वाह किया . हाशमी सर और उनके शिष्यों का आत्मीय संबंध भारतीय संस्कृति की गुरु शिष्य परम्परा का आदर्श उदाहरण है . आज के इस दौर में जहां संबंध स्वार्थ के धागों में गूंथे होते हैं वहीं श्रद्धेय हाशमी सर और उनसे जुड़े उनके शुभचिंतकों , शिष्यों के बीच संबंध विश्वास , श्रद्धा और स्नेह की पवित्र डोरी से बंधे हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी , समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी